1

राजनीतिक विकास

Dr. Akhlakh Ahmad
D.K. College, Dumraon

Q. राजनीतिक विकास क्या है? इसकी मुख्य विशेषताओं की विवेचना करें।

सामाजिक विज्ञानों में विकास की संकल्पना मुख्यतः द्वितीय विश्व युद्ध (1939-45) के बाद नवोदित देशों के मार्गदर्शन के उद्देश्य से विकसित की गई। इन देशों को सामूहिक रूप से "विकासशील देश" कहा जाता है। इस संकल्पना के अन्तर्गत उन्नत समाज के कुछ लक्षणों की पहचान कर ली जाती है, और फिर यह मान्यता रखी जाती है कि समाज अपने निम्नतर रूपों से उच्चतर रूपों की ओर अग्रसर होता है। इसमें यह संकेत भी निहित है कि हमें समाज के उच्चतर रूपों को ही अपना लक्ष्य बनाकर चलना चाहिए। अतः विकास का अभिप्राय प्रगति की दिशा में अग्रसर होना है।

राजनीतिक विकास वह प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से किसी विकासशील देश की राज्य-व्यवस्था विकसित समाज की विशेषताएँ अर्जित कर लेती है। राजनीतिक विकास की संकल्पना मुख्यतः उदारवादी परंपरा की देन है। इस परम्परा के अन्तर्गत पश्चिमी जगत के उदारलोकतंत्र को विकसित समाज का प्रतिरूप माना जाता है।

व्यवस्था सिद्धान्त और संरचनात्मक - प्रकार्यात्मक उपागम पाश्चिमी राजनीतिक व्यवस्था को समझने में तो काफी सहायक थे परंतु विकासशील राज्यों की राजनीतिक व्यवस्था में होने वाले उलट फेर को समझने और समझाने में विशेष सहायता नहीं कर सके। फलस्वरूप राजनीतिक विकास के अवधारणा की आवश्यकता महसूस हुई। लूसियन पाई, ऑमण्ड, कोलमैन, रिग्स, माइनर विनर आदि विद्वानों ने इन विकासशील देशों में अस्थायित्व, भ्रष्ट-व्यवस्था तथा अनिश्चितता के घटनाक्रम को समझने के लिए इन देशों के राजनीतिक प्रक्रियाओं का अध्ययन किया, तथा इनके राजनीतिक विकास के क्रम में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

लूसियन पाई ने राजनीतिक विकास को परिभाषित करते हुए कहा है कि — 'राजनीतिक विकास संस्कृति के विकास और जीवन के पुराने प्रतिमानों को नई मांगों के अनुकूल बनाने, उन्हें एक साथ मिलाने या उनके साथ सामंजस्य स्थापित करने की प्रक्रिया है।' ऑमण्ड एवं पॉवेल के अनुसार — 'राजनीतिक विकास राजनीतिक संरचनाओं का वर्धित "विभिन्नीकरण और विशेषीकरण तथा राजनीतिक संस्कृति का बढ़ा हुआ लौकिकीकरण है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर

Scanned with CamScanner

हम कह सकते हैं कि राजनीतिक विकास के अन्तर्गत एक प्रक्रिया है, जिससे जनता में समानता और राजनीतिक व्यवस्था में कार्यक्षमता तथा उसकी उप-व्यवस्थाओं की स्वायत्तता बढ़ जाती है।

<u>राजनीतिक विकास का स्वरूप</u> :- राजनीतिक विकास के स्वरूप के सम्बन्ध में विद्वानों के बीच मतैक्य का अभाव पाया जाता है। कुछ विद्वान राजनीतिक विकास को आर्थिक विकास की सहायक स्थिति मानते हैं। इमर्सन, लिपसेट, कोलमैन आदि विद्वान राजनीतिक विकास को आर्थिक विकास की राजनीतिक पूर्व शर्त स्थिति के रूप में व्याख्या करते हैं।

रोस्टॉव जैसे अर्थशास्त्री ने राजनीतिक विकास को औद्योगिक समाज की विशिष्ट राजनीति के रूप में देखा है। गुन्नार मिर्डल और लर्नर जैसे समाजशास्त्रियों ने राजनीतिक विकास को राजनीतिक आधुनिकीकरण का पर्याय माना है। डायश ~~जैसे~~ ने इसे जनसंचारण एवं जनसहभागिता के रूप में देखा है।

साम्यवादी एवं एकाधिकारवादी व्यवस्थाओं के समर्थकों के अनुसार राजनीतिक विकास का तात्पर्य व्यवस्था का स्थायित्व समझा जाता है।

आमण्ड, कोलमैन, आयजेन्स्टॉड आदि विद्वानों ने राजनीतिक विकास को सामाजिक परिवर्तन की बहुआयामी प्रक्रिया माना है।

<u>राजनीतिक विकास की प्रकृति</u> :- इस सम्बन्ध में दो दृष्टिकोण हैं -

i) एकमार्गी दृष्टिकोण (Unilinear View). तथा

ii) बहुमार्गी दृष्टिकोण (Multilinear View).

एक मार्गी दृष्टिकोण के प्रवर्तकों की यह मान्यता है कि सभी राजनीतिक व्यवस्थाओं में विकास का एक ही मार्ग होता है, तथा सभी राष्ट्रों में विकास इस एक मार्ग की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में होता है, तथा इनकी यह भी मान्यता है कि राजनीतिक विकास की ओर उन्मुख राष्ट्रों के सम्मुख विकसित राज्य के विकास का मॉडल रहता है। सामान्यतया, विकासोन्मुख राष्ट्र अपने राजनीतिक विकास के लिए तीन मॉडलों - पाश्चात्य देशों का मॉडल, -

सोवियत रूस का मॉडल तथा चीन का मॉडल - में से ही किसी एक को अपना मॉडल बनाते हैं। कुछ विकासोन्मुख देशों ने अपना देशीय मॉडल भी तैयार किया है। उदाहरण के लिए भारत ने अपने राजनीतिक विकास के लिए न तो पूर्णतया पाश्चात्य मॉडल को अपनाया है, और न ही पूर्णतया सोवियत मॉडल को। भारत में दोनों के बीच का एक मॉडल तैयार कर अपनाया गया है।

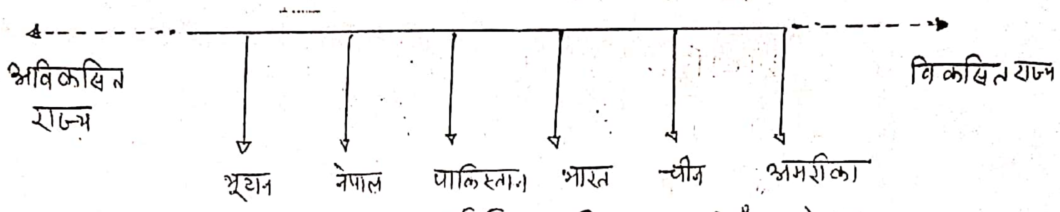

राजनीतिक विकास निरंतर रेखा

ii) बहुमार्गी दृष्टिकोण :- राजनीतिक विकास के बहुमार्गी दृष्टिकोण की यह मान्यता है कि राजनीतिक विकास बहुदिशायी और बहुआयामी है। विकास के अनेक दिशायें एवं अनेक प्रवाह होते हैं। बहुमार्गी दृष्टिकोण के प्रवर्तकों का यह स्पष्ट मत है कि जब सामाजिक विकास बहुआयामी और बहुदिशायी है, तो राजनीतिक विकास का बहुदिशायी तथा बहुआयामी होना स्वाभाविक है। बहुमार्गी दृष्टिकोण के अनुसार राजनीतिक विकास की प्रक्रियाओं पर ऐतिहासिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्थितियों का प्रभाव पड़ता है।

लूसियन पाई द्वारा प्रतिपादित राजनीतिक विकास का प्रतिमान :—

भिन्न-भिन्न विचारकों ने राजनीतिक विकास के भिन्न-भिन्न प्रतिरूप प्रस्तुत किये हैं। इनमें दो प्रतिमान - एक, लूसियन पाई तथा कोलमैन के द्वारा, तथा दूसरा आमण्ड और पावेल द्वारा प्रस्तुत किया गया प्रतिरूप विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जो बहुत कुछ एक जैसे चिंतन पर आधारित हैं।

Scanned with CamScanner

पहले प्रतिरूप के अंतर्गत राजनीतिक विकास और आधुनिकीकरण की संकल्पनाओं को मिला दिया गया है। इसे लूसियन पाई तथा कोलमैन ने "Political Culture & Political Development" के अंतर्गत विकसित किया है। इसमें यह मान्यता निहित थी कि 'आधुनिक व्यवस्था' राज्य और समाज की समस्याओं को सुलझाने में अधिक कार्यकुशल सिद्ध होती है। जैसे - परंपरागत गैर-मशीनीकृत कृषि की तुलना में आधुनिक युग की ~~कृषि प्रणाली~~ औद्योगिक प्रणाली अधिक कार्यकुशल मानी जाती है, वैसे ही यह सोचा जाता है कि परंपरागत राजनीतिक व्यवस्था की तुलना में आधुनिक राजनीतिक प्रणाली अधिक कार्यकुशल होती है।

परंपरागत व्यवस्था का मुख्य सरोकार कर-संग्रह, कानून और व्यवस्था, तथा प्रतिरक्षा से था, पर आधुनिक व्यवस्था सरकार के परंपरागत कार्यों के अलावा अपने नागरिकों के जीवन को उन्नत करने में भी सक्रिय भूमिका निभाती है।

परंपरागत व्यवस्था के अंतर्गत जनसाधारण राजनीति के साथ नहीं जुड़े रहते हैं, और सरकार उनपर केवल शक्ति का प्रयोग करती है; जबकि आधुनिक व्यवस्था के अंतर्गत जनसाधारण राजनीति के साथ निकट से जुड़े रहते हैं; वे अपनी माँगें और विचार सरकार तक पहुँचाते हैं; सरकार की नीतियों के प्रति अपना समर्थन या विरोध व्यक्त करते हैं, और सरकार अपने नागरिकों का समर्थन एवं सहयोग प्राप्त करने के लिए मुख्यतः वैधता का सहारा लेती है।

Scanned with CamScanner

लूसियन पाई के अनुसार राजनीतिक विकास की विशेषताएँ —

लूसियन पाई के अनुसार राजनीतिक विकास की तीन प्रमुख विशेषताएँ होती हैं — (i) समानता, (ii) क्षमता और (iii) विभिन्नीकरण

(1) **समानता** :— पाई के अनुसार राजनीतिक विकास की प्रमुख विशेषता राजनीतिक व्यवस्था के व्यक्तियों में समानता के प्रति सामान्य भावना का उत्पन्न होना है। पाई के अनुसार समानता उसी अवस्था में आई हुई मानी जाएगी, जब राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने वाले सभी लोगों को समान अवसर प्राप्त हों, और राजनीतिक प्रक्रियाओं में जनसहभागिता में किसी प्रकार का भेदभाव न हो।

इससे स्पष्ट है कि पाई समानता को केवल सीमित अर्थों में लेते हुए राजनीतिक विकास की विशेषता नहीं मानते। राजनीतिक विकास के लक्षण के रूप में समानता से पाई का तात्पर्य इसकी निम्नलिखित विशेषताओं से है —

(i) राजनीतिक प्रक्रिया के सभी स्तरों पर नागरिकों को समान अवसर प्राप्त हो।

(ii) जन-सहभागिता भेदभाव रहित हो।

(iii) पराधीन और आदेश प्राप्त करने वाली जनता के स्थान पर राजनीतिक निर्णयों में सम्मिलित और सहयोगी जनता हो।

(iv) कानून सर्वव्यापकता रखते हों, अर्थात समाज के सभी व्यक्ति एक से कानूनों के अनुसार शासित हों।

(v) उपलब्धि के आधार पर ही राजनीतिक भर्ती हो।

इस प्रकार के लक्षणों वाला राजनीतिक समाज समानता वाला होगा, जो पाई के अनुसार राजनीतिक विकास का मौलिक लक्षण है। पाई राजनीतिक विकास के लक्षणों को सैद्धान्तिकता से व्यवहारिकता के स्तर पर परखता है।

(2) **क्षमता** :- राजनीतिक विकास की दूसरी विशेषता का सम्बंध राजनीतिक व्यवस्था की क्षमता से है। समानता के लक्षण का सम्बंध ~~राजनीतिक~~ सम्पूर्ण जनसमुदाय से है, जबकि क्षमता का सम्बंध राजनीतिक शक्ति की संरचनात्मक व्यवस्था की प्रभावकारिता से है।

पाई के अनुसार इस विशेषता का सम्बंध राजनीतिक व्यवस्था के निर्गतों से अधिक है।

राजनीतिक विकास में राजनीतिक व्यवस्था की क्षमता-वृद्धि की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं —

(i) माँगों का समुचित समाधान करना।

(ii) विवादों को तर्कसंगत आधार पर सुलझाना।

(iii) शासन की प्रभावकारिता व सम्भवता।

(iv) प्रशासकीय निपुणता व कार्यकुशलता।

(v) प्रशासनिक बुद्धि संगतता।

इस विशेषता का सीधा सम्बन्ध राजनीतिक व्यवस्था की क्षमता से होता है। राजनीतिक विकास उसी राजनीतिक व्यवस्था में होता है, जिसकी क्षमता उपरोक्त आयामों में बढ़ जाती है। उदाहरण के लिए समाज में उठने वाली माँगों में उचित व अनुचित सभी प्रकार की माँगें सम्मिलित होती हैं। अनुचित माँगों को दृढ़ता के साथ अस्वीकार कर सकना राजनीतिक व्यवस्था की क्षमता का सूचक है।

(3) **विभिन्नीकरण** :— विभिन्नीकरण का अर्थ यह है कि राजनीतिक प्रणाली के विशिष्ट कृत्यों को संपन्न करने के लिए भिन्न-भिन्न और विशिष्ट संरचनाएँ उभर कर सामने आती हैं, और उसमें भाग लेने वाली संस्थाओं और संगठनों में परस्पर संयोजन भी बढ़ जाता है। इसमें निम्नलिखित विशेषताएँ सम्मिलित हैं —

(i) राजनीतिक संरचनाएँ अलग-अलग कार्यों के लिए पृथक-पृथक होती हैं।

(ii) कार्यात्मक दृष्टि से कार्यों का विभाजन होता है।

(iii) प्रकार्यात्मक सुनिश्चितता होती है।

(iv) इन संरचनाओं में समन्वय स्थापित होता है।

Dr. Akhlakh Ahmed
Assistant Professor
Dept. of Political Science
D.K. College, Dumraon

Scanned with CamScanner